डॉ0 लोहिया के विचारों में राष्ट्रीयता की भावना

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

डॉ0 लोहिया जी लोकतान्त्रिक राजनीतिक स्वतन्त्रता के सच्चे समर्थक थे। डा0 राम मनोहर लोहिया का मानना था कि स्वतन्त्र समुदाय बनाने की स्वतन्त्रता व निजी जीवन की स्वतन्त्रता के क्षेत्र सुरक्षित होने चाहिए और किसी भी सरकार को बलपूर्वक उसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। सामान्य लोगों के अधिकारों प प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए वैयक्तिक व सामूहिक सविनय अवज्ञा भी गाँधीवादी कार्यप्रणाली का समर्थन किया। विश्व में झगड़े को समाप्त करने के लिए विश्व संसद होनी चाहिए। समाजवाद की स्थापना के बाद विष्व का संसद के निर्माण का प्रयत्न करना चाहिए। लोहिया जी लिखते है कि ''वालिग मताधिकार पर चुनी विश्व पंचायत का निर्माण हो जिसमें सभी देशों में युद्ध बजट का 1ध्4 या 1ध्5 को हिस्सा मिले। इसके लिए सत्याग्रह के द्वारा विश्व पंचायत को सम्भव बताया। डॉ0 लोहिया जी ने मार्क्स की द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की धारणा को स्वीकार किया, लेकिन इसमें चेतना को अधिक महत्व दिया। डॉ0 लोहिया जी एक ऐसे सिद्धान्त की रचना के पक्ष में हैं। जिसके अन्तर्गत आत्मा या सामान्य उद्देश्यों का परस्पर ऐसा सम्बन्ध हो कि दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व कायम रह सके। इनके भौतिकवाद को चेतनावाद में बदल दिया गया। इनका कहना था कि– ''एक ऐसे बौद्धिक यन्त्र को निर्मित करना चाहिए, जो आत्मा या सामान्य उद्देश्यों में स्वायत्त सम्बन्ध को स्थापित कर सकें।

जहाँ डॉ0 लोहिया आइन्सटीन को गाँधीजी के साथ बींसवी सदी का महान आविष्कारक मानते थे, वहीं एटमबम के मुकाबले में अहिंसात्मक सिविल नाफरमानी को उस एटमबम का अवरोधक और विनाशक मानते थे। अन्याय के प्रतिकार के रूप में डॉ0 लोहिया गाँधीवादी सविनय अवज्ञा अथवा सिविल नाफरमानी के सिद्वान्त के जबरदस्त समर्थक थे। अन्याय के विरूद्ध यह अहिंसक विरोध का एक तरीका है, जिसका प्रयोग गाँधीजी ने जहाँ अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता आंदोलन में बड़े पैमाने पर किया, वहीं डॉ0 लोहिया ने इसका प्रयोग आजादी के बाद समाज में संभव समता और सम्पन्नता स्थापित करने के लिये किया। देश के निर्धन एवं असहायों के जीवन में जो आर्थिक और सामाजिक विसंगतियां हैं, उन्हें दूर करने के लिये समय–समय पर डॉ0 लोहिया ने सत्याग्रह और सिविल नाफरमानी के आंदोलन चलाकर देश का ध्यान उस ओर आकृष्ट किया। डॉ0 लोहिया का मानना था कि कई बार लोकतांत्रिक व्यवस्था शक्तिशालियों और साधन सम्पन्नों से नियंत्रित हो जाती है एवं अनेक बार इस कारण भी कि मतदान परिणाम जनता की इच्छा को सही रूप में व्यक्त नहीं हो पाते है। अतः न्याय की प्राप्ति के लिये एवं अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध तत्काल कुछ करने की आवश्यकता होती है, तब सविनय अवज्ञा जैसी प्रत्यक्ष कार्यवाही के आधार पर ही कुछ किया जा सकता है। गाँधीजी एवं लोहिया की सिविल नाफरमानी में एक अन्तर है। गाँधीजी के लिये सिविल नाफरमानी का लक्ष्य जालिम का हृदय परिर्वतन है वहीं डॉ0 लोहिया दुश्मन के हृदय परिर्वतन की चिन्ता न कर

विशाल जनमानस के हृदय परिवर्तन पर बल देते थे। वे अन्याय सहन करते थक चुके जनमानस में एक आक्रोश पैदा कर उसे जाग्रत करना चाहते थे, क्योंकि जन इच्छा और जन शक्ति परिवर्तन तब परिवर्तन ला ही देगी। इसके माध्यम से कमजोर एवं असमर्थ व्यक्ति अहिंसक तरीके से यह घोषित करता है कि वह अन्याय का मुकाबला करने के लिये मरने के भी तैयार है, लेकिन उसके अन्याय एवं अत्याचार के सामने झुकने के लिये तैयार नहीं। 'मारेगें नहीं लेकिन मानेंगे नहीं', 'मरेगें लेकिन झुकेंगे नहीं', तथा 'मारो अगर मार सकते हो, लेकिन हम तो अपने हक पर अड़े रहेंगे' आदि इस सिविल नाफरमानी के सिद्धान्त आधारभूत तत्व हैं, जो आत्मबल पर आधारित इच्छा शक्ति के प्रतीक हैं जिसमें त्याग और आत्म बलिदान के माध्यम से ही विजय प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि सिविल नाफरमानी किसी को मारने का सिद्वान्त नहीं वरन् सत्य और न्याय के लिये मरने का सिद्धान्त है। लोहिया जी का मानना था कि यह आवश्यक नहीं कि भूख और भारी आपदायें भुगत रही जनता संसद के निर्णय या आगामी चुनावों के लिये प्रतीक्षा करे, इस हेतु उनके हाथों में सिविल नाफरमानी का अमूल्य और अतुलनीय शस्त्र सदैव ही विद्यमान है। उनका प्रसिद्ध वाक्य था–''जिन्दा कौमें पाँच वर्ष तक प्रतीक्षा नहीं करतीं''।

डॉ0 लोहिया आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत से भी प्रभावित हुए। सारी दुनिया के वैज्ञानिक आइंस्टीन के इस सूत्र से परमाणु शक्ति बनाने का प्रयास कर रहे थे, जिससे डा0 लोहिया को आभास होने लगा था कि मनुष्य–जाति एक नयी चमत्कारी खोज के कगार पर है। डा0 लोहिया जी का मानना था कि मनुष्य को मनुष्य की हत्या नहीं करनी चाहिए। गाँधी जी ने इस सिद्धांत को व्यावहारिक राजनीति में उतारा, इसी चीज ने डा0 लोहिया को आजीवन गाँधी जी से जोड़े रखा। अहिंसा को तो डा0 लोहिया ने अपनाया, परंतु हिंसा को सामाजिक परिवर्तन का कभी उपयुक्त उपकरण नहीं माना, इसीलिए क्रांतिकारी परिवर्तन के किसी प्रयत्न की कभी इन्होंने निन्दा नहीं की कि वह हिंसात्मक था। खुली, साहसपूर्ण, हिंसक क्रांतिकारिता के वे समर्थक नहीं थे, लेकिन वे स्वीकार करते थे कि मनुष्य को अन्याय का विरोध और प्रतिकार करने का अधिकार है, चाहे वह जिस उपाय से हो। डा0 लोहिया गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के अखण्ड समर्थक थे, लेकिन गांधीवाद को वे अधूरा दर्शन मानते थे। वे समाजवादी थे, लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे। वे राष्ट्रवादी थे लेकिन विश्व सरकार का सपना देखते थे। वे आधुनिकतम विद्रोही तथा क्रांतिकारी थे लेकिन शांति व अहिंसा के अनूठे उपासक थे।

पानदरीबा सोशलिस्ट क्लब की बैठक में दिये गये भाषण में डा0 लोहिया ने कहा, था कि ''केन्द्रीभूत उत्पादन के आधार को चलाने वाली सभ्यता चाहे वह एडमस्मिथ के सिद्धान्तों पर आधारित हों अथवा कार्लमार्क्स के, कम से कम एशिया में तो रोटी की समस्या हल नहीं कर सकती। आर्थिक और राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों को अपनाकर ही शोषणमुक्त समाज की समस्या हल हो सकती है।'' डा0 लोहिया जी ने इतिहास की पुनर्व्याख्या की व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक शक्तियों को नवीन दृष्टियों से देखा। एक क्रान्तिकारी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण की उनकी शाश्वत आकांक्षा थी। शान्तिपूर्ण साधनों के पोषक थे जिससे दो राष्ट्रों का एकीकरण हो सका। विश्व नागरिकता का स्वप्न देखने वाले लोहिया जी सम्पूर्ण मानव मात्र को एक परिवार मानते थे। आपकी इच्छा थी कि प्रत्येक देश का नागरिक बिना कानूनी बाधा के हर देष में भी जा सके। विश्व संसद मे व्यस्क मताधिकार के आधार पर निर्वाचित प्रतिनिधियों की संस्था होनी चाहिए। अंग्रेजी के बजाय सरल हिन्दी भाषा बनाने के हिमायती थे।

डॉ0 लोहिया राष्ट्रीय जमींदारी प्रथा के ही विरूद्ध नहीं थे वरन् उनकी सूक्ष्म दृष्टि में अन्तर्राष्ट्रीय जगत को भी इस समस्या से जकड़े हुए पाया। राष्ट्रीय जमींदारी प्रथा को समाप्त करने के साथ–साथ वह अन्तर्राष्ट्रीय जमींदारी को भी समाप्त करना चाहते थे। उनके मत में यह घटना मात्र आकस्मिक है कि किसी राष्ट्र को अधिक जमींन प्राप्त हो गयी और किसी को कम। इसलिए विश्व के समस्त राष्ट्रों में जमींन का लगभग समान वितरण होना चाहिए। डॉ0 लोहिया के इस विचार के विषय में कहा जा सकता है कि जमींदार राष्ट्र से यह आशा करनी व्यर्थ है कि वे अपने प्रदेश के किसी भाग को छोटे जमींदार राष्ट्रों को अपने समान जमींदार बनाने के लिए त्याग दें। भूमि का पुनर्वितरण किसी राज्य विशेष के अन्तर्गत व्यक्तियों के बीच ही संभव हो सकता है, किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय जगत में सम्प्रभुता की अनुपस्थिति के अभाव में यह विचार कल्पना ही प्रतीत होता है।

डॉ0 लोहिया का कहना था कि युद्ध और शान्ति भंग करने वालों के खिलाफ कोई प्रभावशाली नियन्त्रण नहीं रहा। प्रत्येक देश अलगाववादी स्थिति में रह गया था । तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त रूप से इनके विरूद्ध प्रयास नहीं किया गया। यूरोपीय समाजवाद में अनुदारवादी तत्व काफी मात्रा में प्रवेश कर गये हैं क्योंकि यहाँ के समाजवादियों का केवलमात्र उद्देश्य चुनावों में सफलता प्राप्त करना रह गया है। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि वहाँ के समाजवादियों को मध्यमवर्ग के पूर्वाग्रहों को खुश करने के लिये विवश होना पड़ा, क्योंकि चुनाव सफलता आम जनता की जागरूकता की अपेक्षा मध्यम वर्ग की मनोदशा पर अधिक निर्भर करती है। दूसरे अस्थिर मतदाता– जो कि कई बार समाजवादियों को सत्ता प्राप्ति में सहायक हुये, अतः समाजवादी अवसरवादिता की इस स्थिति के कारण यूरोपीय समाजवाद यथास्थितिवाद का समर्थक बन गया। डॉ0 लोहिया के शब्दों में, ''एक ब्रिटिश समाजवादी भारत के कॉमनवेल्थ में रहने के प्रश्न पर भारत के किसी भी अनुदारवादी व्यक्ति से अधिक साम्य रखता है, एक सोशलिस्ट से कम।'' डॉ0 लोहिया का मानना है कि यूरोपीय समाजवाद में ''इथोस'' और ''इलान'' का अभाव रहा। लेबनान के समाजवादी प्रगतिशील दल के अध्यक्ष कमल–जुमलात के साथ अपने संयुक्त वक्तव्य (7 दिसम्बर सन 1951 ई0) में डॉ0 लोहिया ने कहा कि–पूँजीवादी लोकतंत्र और रूसी कम्युनिज्म से अलग अपना एक निश्चित स्वरूप और उसके स्पष्ट पहलू न बन पाने के कारण यूरोपीय समाजवाद मानव के लिये व्यक्तिगत और सामाजिक पक्ष, संस्थागत और मानवीय पहलुओं से पूरी तरह आजाद करने के अपने आदर्श में असफल रहा।'' चीन ने तिब्बत पर हमला कर दिया है, जिसका केवल एक मतलब हो सकता है कि एक शिशु को मसल डालने के लिये राक्षस ने कदम बढ़ा लिया है। तिब्बत पर आक्रमण को यह कहना कि वह 30 लाख लोगों को मुक्त करने का प्रयास है, भाषा का अर्थ ही मिटा देने के बराबर है और सारे मानवीय संसर्ग और बोध को खत्म कर देना है। इससे आजादी और गुलामी, वीरता और कायरता, निष्ठा और द्रोह, सत्य और असत्य समानार्थक हो जायेंगे। चीन की जनता के प्रति हमारी दोस्ती और आदर कभी कम नहीं होगा किन्तु हमें अपनी धारणा व्यक्त कर देनी चाहिए कि इस आक्रमण और शिशु हत्या का कलंक चीन की वर्तमान सरकार कभी नहीं धो सकेगी। चीन का यह दावा कि वह तिब्बत में अपनी पश्चिमी सीमाओं को सुरक्षित करना चाहता है सर्वथा अनिष्कर है। इस आधार पर तो प्रत्येक राष्ट्र संसार भर में अपनी सीमाओं को सुरक्षित करने का प्रयास करेगा। इसके अलावा, चीन की तुलना में हिन्दुस्तान के साथ तिब्बत के सम्बन्ध अधिक गहरे हैं। डॉ. राममनोहर लोहिया का कहना है कि मैं यहॉ सामरिक सम्बन्धों की बात नहीं करता लेकिन विशेषकर पश्चिमी तिब्बत से भाषा, व्यापार

और संस्कृति के सम्बन्धों में यह देखा जा सकता है। तिब्बत में घुसकर चीन की वर्तमान सरकार ने न केवल अंतर्राष्ट्रीय सदाचार की ही अवहेलना की है, बल्कि हिन्दुस्तान के हितों पर भी आघात किया है।

नागरिकता के सम्बन्ध में डॉ0 लोहिया का कहना था कि नागरिकता के लिए जैसे जन्म या निवास का आधार माना जाता है। वैसे बौद्धिक वफादारी और दिली सहमति को भी पर्याप्त आधार मानना चाहिए । और किसी अवस्था मे धरती के किसी भी कोने में घूमने, रहने और मरने के अधिकार को अक्षुण्य मानवीय अधिकार मानना चाहिए जिसे किसी देश का कानून बांध न सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- लोहिया डॉ0 राममनोहर – डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमारआनन्द, कुमार, मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम मनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- *The Secret Film, www.Thesecret.tv* (रहस्य)
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- पाठक नरेन्द्र–कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008
- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013